साहित्य की विधाएं - काव्य

डॉ॰ सतीश चन्द्र पाठक, हिन्दी विभाग
एस॰एस॰ कॉलेज, जहानाबाद

अपने पिछले वर्गों में हमने संक्षेप में यह देखा कि साहित्य या काव्य का सृजन कैसे होता है। हमने इस क्रम में यह पाया कि काव्य-सृजन की प्रक्रिया भावनात्मक अधिक बौद्धिक कम है। क्योंकि काव्य भावनाओं का सहज उच्छलन है अतः बुद्धि की अर्थात् बौद्धिक व्यायाम की भूमिका यहां अत्यन्त सीमित हो जाती है। अब हम काव्य के जो अनेक भेदोपभेद होते हैं, हम उनके सम्बन्ध में जानेंगे। जैसा कि पूर्व में बताया गया है कि आरंभिक काल में साहित्य काव्य का समानार्थी था अतः काव्य के जो भेदोपभेद हैं वही साहित्य के भी हैं। साहित्य और काव्य भिन्न नहीं हैं जैसे जल और उसकी तरंगें भिन्न नहीं होतीं, ठीक वैसे ही काव्य एवं साहित्य भी है।

सर्वप्रथम काव्य के दो भेद —

(I) श्रव्य काव्य (II) दृश्यकाव्य

श्रव्यकाव्य काव्य का वह स्वरूप है जिसका आनन्द हमें सुनकर के उठाते हैं जैसे कविता, गीत इत्यादि।

दृश्यकाव्य का आनन्द हमें देखने से प्राप्त होता है अर्थात् दृश्य काव्य में प्रेक्षण की अनिवार्यता है। जैसे नाटक, एकांकी इत्यादि

अब श्रव्य काव्य के दो भेद —

(I) गद्य एवं (II) पद्य

गद्य के अनेकानेक भेद हैं जो समय के अनुसार बढ़ते जा रहे हैं —

(1) उपन्यास (2) कहानी (3) निबंध (4) संस्मरण
(5) शब्द चित्र या रेखाचित्र (6) आत्मकथा (7) जीवनी
(8) रिपोर्ताज

पद्य के दो भेद-

① प्रबंध काव्य ② मुक्तक काव्य ③ चम्पूकाव्य

पुनः प्रबंध काव्य के भी दो भेद-

(I) महाकाव्य (II) खंडकाव्य

मुक्तककाव्य के अनेक भेद-

(I) गीत (II) सूक्तियां (III) क्षणिकाएं

इसीप्रकार ~~दृश्य~~ दृश्यकाव्य के भेद निम्नांकित हैं-

(I) नाटक, (II) एकांकी (III) रूपक (IV) प्रहसन